(33)

MAHARSHI DAYANAND UNIVERSITY ROHTAK

A State University established under Haryana Act No.XXV of 1975)

'A' Grade University Accredited by NAAC

No. Skt/18/_____ Dated:

_____

To
The Superintendent (Academic)
M.D. University
Rohtak

Sub: Supply of syllabi entrance examination for M.Phil./Ph.D. Programme for the session 2018-19.

Please find herewith the syllabi of entrance examination for M.Phil./Ph.D. Programme (Sanskrit) course for the session 2018-19.

This is for your information and further necessary action, please.

Sincerely yours

Head, 16/10/18
Deptt. of Sanskrit
M.D. University, Rohtak

Encls: D/A

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
NET BUREAU

Code No. : 25

Subject : SANSKRIT

पाठ्यक्रम एवं नमूने के प्रश्न-पत्र

टिप्पणी :

पाठ्यक्रम में दो प्रश्न-पत्र होंगे, प्रश्न-पत्र—II तथा प्रश्न-पत्र—III (भाग-A तथा B)। प्रश्न-पत्र—II में 50 बहु-विकल्पी प्रश्न (बहु-विकल्पी टाइप, सुमेलित टाइप, सत्य/असत्य, कथन-कारण टाइप) होंगे, जिनका अंक 100 होगा। प्रश्न-पत्र—III के दो खण्ड–A और B होंगे; प्रश्न-पत्र—III (A) में लघु निबन्ध प्रकार के 10 प्रश्न (300 शब्दों का) होंगे जिनमें प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का होगा। इनमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आन्तरिक विकल्प होंगे (10 प्रश्न, 10 इकाई से; कुल अंक 160 होंगे)। प्रश्न-पत्र—III (B) अनिवार्य होगा, जिसमें ऐच्छिक विषयों में से एक-एक प्रश्न होंगे। परीक्षार्थी को केवल एक प्रश्न (एक ऐच्छिक केवल 800 शब्दों के) करना होगा, जिसका अंक 40 होगा। प्रश्न-पत्र—III के कुल अंक 200 होंगे।

प्रश्न-पत्र—II

1. वैदिक साहित्य

देवता :

अग्नि ; सवितृ ; विष्णु ; इन्द्र ; रुद्र ; बृहस्पति ; अश्विनौ ; वरुण ; उषस् ; सोम

विषय-वस्तु :

संहिताएँ ; ब्राह्मण एवं आरण्यक ; उपनिषद्

सम्बाद सूक्त :

पुरुरवा—उर्वशी ; यम—यमी ; सर्मा—पणि ; विश्वामित्र—नदी

वैदिक साहित्य का इतिहास :

वैदिक काल के विषय में विभिन्न सिद्धान्त—मैक्समूलर ; ए० वेबर ; जैकोबी ; बालगंगाधर तिलक ; एम्० विन्टरनिट्ज ; भारतीय परम्परागत विचार

ऋग्वेद का क्रम

संहिताओं के पाठ-भेद

वेदांग :

शिक्षा ; कल्प ; व्याकरण ; निरुक्त ; छन्द ; ज्योतिष

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

2. दर्शन

ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका :

सत्कार्यवाद ; पुरुष-स्वरूप ; प्रकृति-स्वरूप ; सृष्टिक्रम ; प्रत्ययसर्ग ; कैवल्य

सदानन्द का वेदान्तसार :

अनुबन्ध-चतुष्टय ; अज्ञान ; अध्यारोप-अपवाद ; लिंगशरीरोत्पत्ति ; पंजीकरण ; विवर्त ; जीवनमुक्ति

केशवमिश्र की तर्कभाषा/अन्नंभट्ट का तर्कसंग्रह :

पदार्थ ; कारण ; प्रमाण—प्रत्यक्ष ; अनुमान ; उपमान ; शब्द

3. व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

व्याकरण :

परिभाषाएँ—संहिता ; गुण ; वृद्धि ; प्रातिपदिक ; नदी ; घि ; उपधा ; अपृक्त ; गति ; पद ; विभाषा ; सवर्ण ; टि ; प्रगुह्य ; सर्वनाम-स्थान ; निष्ठा

कारक : सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार

समास : लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार

भाषाविज्ञान :

भाषा की परिभाषा एवं प्रकार (परिवारमूलक एवं आकृतिमूलक)

भाषाओं का वर्गीकरण

भाषा प्रक्रिया एवं ध्वनियों का वर्गीकरण : स्पर्श, संघर्षी, अर्धस्वर एवं स्वर

ध्वनि सम्बन्धी नियम

भारतीय आर्यभाषा की तीन अवस्थाएँ

4. संस्कृत साहित्य एवं काव्यशास्त्र

निम्नलिखित ग्रन्थों का सामान्य अध्ययन :

पद्य : रघुवंश ; मेघदूत ; किरातार्जुनीय ; शिशुपालवध ; नैषधीयचरित ; बुद्धचरित

गद्य : दशकुमारचरित ; हर्षचरित ; कादम्बरी

नाटक : स्वप्नवासवदत्ता ; अभिज्ञानशाकुन्तल ; मृच्छकटिक ; उत्तररामचरित ; मुद्राराक्षस ; रत्नावली ; वेणीसंहार

काव्यशास्त्र :

साहित्यदर्पण :

काव्य की परिभाषा

काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन

शब्दशक्ति—संकेतग्रह ; अभिधा ; लक्षणा ; व्यञ्जना

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

रस (रस-भेद स्थायी भावों सहित)

रूपक के प्रकार

नाटक के लक्षण

महाकाव्य के लक्षण

प्रश्न-पत्र—III (A)

(अनिवार्य वर्ग)

इकाई—I

संहिताएँ :

निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन :

ऋग्वेद—अग्नि [1.1] ; इन्द्र [2.12] ; पुरुष [10.90] ; हिरण्यगर्भ [10.121] ; नासदीय [10.129] ; वाक् [10.125]

अथर्ववेद—पृथिवी [12.1]

ब्राह्मण एवं आरण्यक :

सामान्य लक्षण ; विशेषताएँ ; दर्शपौर्णमास यज्ञ ; आख्यान—शुनःशेप तथा वाङ्मनस् ; पञ्चमहायज्ञ

व्याकरण एवं वैदिक व्याख्या-पद्धति :

पदपाठ

स्वर—उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित

वैदिक एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर

वैदिक व्याख्या-पद्धति—प्राचीन एवं अर्वाचीन

इकाई—II

विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन। विशेषतः निम्नलिखित उपनिषदों के सन्दर्भ में :

ईश ; कठ ; केन ; बृहदारण्यक ; तैत्तिरीय

इकाई—III

वेदाङ्गों का सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय

निरुक्त (अध्याय 1 और 2)

चार पद—नाम का विचार ; आख्यात का विचार ; उपसर्गों का अर्थ ; निपातों की कोटियाँ

क्रिया के छः रूप (षड्भावविकार)

निरुक्त के अध्ययन के उद्देश्य

निर्वचन के सिद्धान्त

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्तियाँ :

आचार्य ; वीर ; ह्रद ; गो ; समुद्र ; वृत्र ; आदित्य ; उषस् ; मेघ ; वाक् ; उदक ; नदी ; अश्व ; अग्नि ; जातवेदस् ; वैश्वानर ; निघण्टु

इकाई—IV

महाभाष्य (पस्पशाह्निक) :

शब्द की परिभाषा
शब्द एवं अर्थ सम्बन्ध
व्याकरण के अध्ययन के उद्देश्य
व्याकरण की परिभाषा
साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम
व्याकरण की पद्धति

सिद्धान्तकौमुदी :

तिङन्त (भू एवं एध् मात्र)
कृदन्त (कृत्य प्रक्रिया मात्र)
तद्धित (मत्वर्थीय)
कारक प्रकरण
स्त्री प्रत्यय

भाषाविज्ञान :

भाषा की परिभाषा
भाषाओं का वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक)
संस्कृत ध्वनियों के विशेष सन्दर्भ में मानवीय ध्वनि-यंत्र
ध्वनि-परिवर्तन के कारण
ध्वनि-नियम (ग्रिम, ग्रासमान तथा वर्नर)
अर्थपरिवर्तन की दिशाएँ तथा कारण
वाक्य का लक्षण तथा भेद
भारोपीय भाषा परिवार का सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय
भाषा तथा वाक् में अन्तर
भाषा और बोली में अन्तर

इकाई—V

व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न

ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका
सदानन्द का वेदान्तसार
लौगाक्षी भास्कर का अर्थसंग्रह

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

इकाई—VI

रामायण

रामायण का क्रम
रामायण में आख्यान
रामायणकालीन समाज
परवर्ती ग्रन्थों के लिए रामायण एक प्रेरणा-स्रोत
रामायण का साहित्यिक महत्त्व

महाभारत

महाभारत का क्रम
महाभारत में आख्यान
महाभारतकालीन समाज
परवर्ती ग्रन्थों के लिए महाभारत एक प्रेरणा-स्रोत
महाभारत का साहित्यिक महत्त्व

पुराण

पुराण की परिभाषा
महापुराण एवं उपपुराण
पौराणिक सृष्टिविज्ञान
पुराण एवं लौकिक कलाएँ
पौराणिक आख्यान

इकाई—VII

कौटिलीय अर्थशास्त्र (प्रथम दस अधिकार)
मनुस्मृति (प्रथम, द्वितीय तथा सप्तम अध्याय)
याज्ञवल्क्यस्मृति (व्यवहाराध्याय मात्र)

इकाई—VIII

पद्य

रघुवंश (प्रथम तथा चतुर्दश सर्ग)
किरातार्जुनीय (प्रथम सर्ग)
शिशुपालवध (प्रथम सर्ग)
नैषधीयचरित (प्रथम सर्ग)

गद्य :

दशकुमारचरितम् (अष्टमोच्छ्वासः)
हर्षचरितम् (पञ्चमोच्छ्वासः)
कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

काव्यशास्त्र :

काव्यप्रकाश—काव्यलक्षण ; काव्यप्रयोजन ; काव्यहेतु ; काव्यभेद ; शब्दशक्ति ; अभिहितान्वयवाद ; अन्विताभिधानवाद ; रसस्वरूप एवं रससूत्रविमर्श ; रसदोष ; काव्यगुण

अलंकार—अनुप्रास ; श्लेष ; वक्रोक्ति ; उपमा ; रूपक ; उत्प्रेक्षा ; समासोक्ति ; अपह्नुति ; निदर्शना ; अर्थान्तरन्यास ; दृष्टान्त ; विभावना ; विशेषोक्ति ; संकर ; संसृष्टि

ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत)

इकाई—IX

नाट्य—कर्णभार ; अभिज्ञानशाकुन्तल ; उत्तररामचरित ; मुद्राराक्षस ; रत्नावली

नाट्यशास्त्र—भरत-नाट्यशास्त्र (प्रथम, द्वितीय तथा षष्ठ अध्याय) ; दशरूपक (प्रथम तथा तृतीय प्रकाश)

इकाई—X

तर्कसंग्रह (दीपिका व्याख्या सहित)

तर्कभाषा—केशवमिश्र

प्रमातृ, प्रमेय, प्रमाण और प्रमिति की अवधारणाओं का अध्ययन

प्रश्न-पत्र—III (B)

[ऐच्छिक/वैकल्पिक]

ऐच्छिक—I

संहिताएँ :

निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन :

ऋग्वेद

वरुण [1.25]
सूर्य [1.125]
उषस् [3.61]
पर्जन्य [5.83]

शुक्ल यजुर्वेद

शिवसङ्कल्प [1.6]
प्रजापति [1.5]

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

अथर्ववेद

राष्ट्राभिवर्द्धनम् [1.29]
काल [10.53]

ब्राह्मण :

प्रतिपाद्य-विषय
विधि एवं उसके प्रकार
अग्निहोत्र एवं अग्निष्टोम यज्ञ
विभिन्न संहिताओं से ब्राह्मण-ग्रन्थों की सम्बद्धता

ऋक्-प्रातिशाख्य :

निम्नलिखित परिभाषाएँ :

समानाक्षर ; सन्ध्यक्षर ; अघोष ; सोष्म ; स्वरभक्ति ; यम ; रक्त ; संयोग ; प्रगृह्य ; रिफित

निरुक्त (VII-अध्याय—दैवत काण्ड)

मन्त्रों के प्रकार
देवताओं का स्वरूप
देवताओं की संख्या

ऐच्छिक—II

वाक्यपदीय (ब्रह्मकाण्ड)

स्फोट का स्वरूप ; शब्द-ब्रह्म का स्वरूप ; शब्द-ब्रह्म की शक्तियाँ ; स्फोट एवं ध्वनि के बीच सम्बन्ध ; शब्द-अर्थ सम्बन्ध ; ध्वनि के प्रकार ; भाषा के स्तर

सिद्धान्तकौमुदी

समास ; परस्मैपदविधान ; आत्मनेपदविधान

पाणिनीयशिक्षा

ऐच्छिक—III

योगसूत्र—व्यासभाष्य

चित्तभूमि ; चित्तवृत्तियाँ ; ईश्वर का स्वरूप ; योगाङ्ग ; समाधि ; कैवल्य

वेदान्त : ब्रह्मसूत्र-शाङ्करभाष्य [1.1]

न्याय-वैशेषिक : न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)

सर्वदर्शन संग्रह—जैनमत ; बौद्धमत

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

ऐच्छिक—IV

काव्यप्रकाश (द्वितीय तथा पञ्चम उल्लास)

वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम उन्मेष)

काव्यमीमांसा (1 से 5 अध्याय)

रसगङ्गाधर—प्रथम आनन (रसनिरूपणान्त)

ऐच्छिक—V

पुरालिपि :

ब्राह्मीलिपि को पढ़ने का इतिहास
भारत में लेखन कला की प्राचीनता
ब्राह्मीलिपि की उत्पत्ति के सिद्धान्त
शिलालेख सम्बन्धी सामग्री के प्रकार
गुप्त एवं अशोक काल की ब्राह्मीलिपि

अशोक के अभिलेख :

प्रमुख शिलालेख
प्रमुख स्तम्भलेख
गुजर्रा लघु-शिलालेख
मास्कि शिलालेख
रुम्मिनदेई स्तम्भलेख
कान्धार का द्विभाषी शिलालेख

मौर्योत्तर काल के अभिलेख :

कनिष्क के शासन वर्ष 3 का सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख
कनिष्क के शासन वर्ष 18 का मनकियाला अभिलेख
नहपान के काल (वर्ष 41, 42, 45) का नासिक गुहा अभिलेख
रुद्रदामन का गिरनार शिलालेख
खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख

गुप्तकालीन एवं गुप्तोत्तरकालीन अभिलेख :

समुद्रगुप्त का अलाहाबाद स्तम्भ लेख
चन्द्रगुप्त द्वितीय का वर्ष 61 का मथुरा शिलालेख
चन्द्र का महरौली लौह स्तम्भ लेख
कुमारगुप्त प्रथम के काल का बिलसद स्तम्भ लेख
कुमारगुप्त प्रथम का वर्ष 128 का दामोदरपुर ताम्र पट्ट अभिलेख
स्कन्दगुप्त का गिरनार शिलालेख

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

स्कन्दगुप्त का इन्दौर ताम्र पट्ट अभिलेख
स्कन्दगुप्त का भितरी स्तम्भ अभिलेख
तन्तुवाय श्रेणी का मन्दसौर शिलालेख
प्रभावती गुप्ता का पूना ताम्र पट्ट अभिलेख
तोरमाण का एरण अभिलेख
मिहिरकुल का ग्वालियार अभिलेख
यशोधर्मन का मन्दसौर स्तम्भ लेख
यशोधर्मन-विष्णुवर्धन का मन्दसौर शिलालेख
महानामन का बोधगया अभिलेख
यशोवर्मदेव के काल का नालन्दा शिलालेख
आदित्यसेन का अफसद शिलालेख
जीवितगुप्त द्वितीय का देवबर्णारक अभिलेख
धरसेन द्वितीय का मालिया ताम्र पट्ट अभिलेख
ईशानवर्मन का हड़हा अभिलेख
हर्ष का बांसखेड़ा ताम्र पट्ट अभिलेख
पुलकेशी द्वितीय का एहोले शिलालेख
प्रतिहार नृप मिहिरभोज का ग्वालियार अभिलेख

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

नमूने के प्रश्न

प्रश्न-पत्र—II

1. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत—

A.	व्यासः	1.	नैषधम्
B.	माघः	2.	शिशुपालवधम्
C.	श्रीहर्षः	3.	रामायणम्
D.	वाल्मीकिः	4.	महाभारतम्

(A)	A	B	C	D
	1	2	3	4
(B)	A	B	C	D
	3	2	4	1
(C)	A	B	C	D
	2	4	3	1
(D)	A	B	C	D
	4	2	1	3

2. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत—

A.	तत्त्वचिन्तामणिः	1.	रघुनाथः
B.	आख्यातवादः	2.	गङ्गेशः
C.	शब्दशक्तिप्रकाशिका	3.	गदाधरः
D.	व्युत्पत्तिवादः	4.	जगदीशः
		5.	विश्वनाथः

(A)	A	B	C	D
	2	1	4	3
(B)	A	B	C	D
	1	2	3	4
(C)	A	B	C	D
	4	3	2	5
(D)	A	B	C	D
	2	3	5	4

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

प्रश्न-पत्र—III (A)

1. दैवतकाण्डमनुसृत्य सूर्यदेवतायाः वैशिष्ट्यं वर्णयत।

अथवा

पूर्वपक्षनिरासपूर्वकं समवायस्य नित्यत्वं साधयत।

प्रश्न-पत्र—III (B)

11. वेदस्य कालनिर्णये प्राचीनार्वाचीनविदुषां अभिप्रायानाविष्कुरुत।

अथवा

पक्षतालक्षणमनूद्य सोदाहरणं विशदीकुरुत।

★ ★ ★

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

Note :

There will be two question papers, Paper—II and Paper—III (Part-A & B). Paper—II will cover 50 Objective Type Questions (Multiple choice, Matching type, True/False, Assertion-Reasoning type) carrying 100 marks. Paper—III will have two Parts A and B; Paper—III(A) will have 10 short essay type questions (300 words) carrying 16 marks each. In it there will be one question with internal choice from each unit (i.e., 10 questions from 10 units) (Total marks will be 160). Paper—III(B) will be compulsory and there will be one question from each of the Electives. The candidate will attempt only one question (one elective only in 800 words) carrying 40 marks. Total marks of Paper—III will be 200.

PAPER—II

1. VEDIC LITERATURE

Deities

Agni; Savitṛ; Viṣṇu; Indra; Rudra; Bṛhaspati; Aśvinā; Varuṇa; Uṣas; Soma

Subject matter of :

Saṁhitās; Brāhmaṇas and Āraṇyakas; Upaniṣads

Dialogue Hymns

Pururavā—Urvaśī; Yama—Yamī; Sarmā—Paṇi; Viśvāmitra—Nadī

History of Vedic Literature :

Main theories regarding the age of the Ṛgveda—Maxmüller; A. Weber; Jacobi; Balgangadhar Tilak; M. Winternitz; Indian traditional views

Arrangement of the Ṛgveda

Recensions of the Saṁhitās

Vedāṅgas :

Śikṣā; Kalpa; Vyākaraṇa; Nirukta; Chandas; Jyotiṣ

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

2. DARŚANA

Sāṁkhyakārikā of Īśvarakṛṣṇa :

Satkāryavāda; Puruṣa-svarūpa; Prakṛti-svarūpa; Sṛṣṭikrama; Pratyayasarga; Kaivalya

Vedāntasāra of Sadānanda :

Anubandha-catuṣṭaya; Ajñāna; Adhyāropa-Apavāda; Lingaśarīrotpatti; Pañcikaraṇa; Vivarta; Jīvanmukti

Tarkabhāṣā of Keśavamiśra/Tarkasaṁgraha of Annambhaṭṭa :

Padārtha; Kāraṇa; Pramāṇa; Pratyakṣa; Anumāna; Upamāna; Śabda

3. GRAMMAR AND LINGUISTICS

Grammar :

Definitions—Saṁhitā; Guṇa; Vṛddhi; Prātipadika; Nadī; Ghi; Upadhā; Apṛkta; Gati; Pada; Vibhāṣā; Savarṇa; Ti; Pragṛhya; Sarvanāmasthāna; Niṣṭhā

Kāraka : As per Siddhāntakaumudī

Samāsa : As per Laghusiddhāntakaumudī

Linguistics :

Definition and types of languages—geneological and morphological

Classification of Languages

Speech-mechanism and classification of sounds : stops, fricatives, semi-vowels and vowels

Phonetic Laws

Characteristics of the three types of Indo-Aryan

4. SANSKRIT LITERATURE AND POETICS

General study of the following works :

Poetry : Raghuvaṁśa; Meghadūta; Kirātārjunīya; Śiśupālavadha; Naiṣadhiyacarita; Buddhacarita

Prose : Daśakumāracarita; Harṣacarita; Kādambarī

Drama : Svapnavāsavadattā; Abhijñānaśākuntala; Mṛcchakaṭika; Uttararāmacarita; Mudrārākṣasa; Ratnāvalī; Veṇīsaṁhāra

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

Poetics :

Sāhityadarpaṇa

Definition of Kāvya

Refutation of other definitions of Kāvya

Śabdaśakti—

Saṅketagraha; Abhidhā; Lakṣaṇā; Vyanjanā

Rasa—Types of Rasas with their sthāyī bhāvas

Types of Rūpaka

Characteristics of Nāṭaka

Characteristics of Mahākāvya

PAPER—III(A)

[CORE GROUP]

Unit–I

Saṁhitās :

Study of the following hymns :

Ṛgveda—Agni [1.1]; Indra [2.12]; Puruṣa [10.90]; Hiraṇyagarbha [10.121]; Nāsadīya [10.129]; Vāk [10.125]

Atharvaveda—Pṛthivī [12.1]

Brāhmaṇas and Āraṇyakas :

General characteristics; Peculiarities; Darśapaurnamāsa sacrifice; Legends—Śunaḥśepa and Vāṁmanas; Pañcamahāyajñas

Grammar and Schools of Vedic Interpretation :

Padapāṭha

Accent—Udātta, Anudātta and Svarita

Points of difference between Vedic and Classical Sanskrit

Schools of Vedic Interpretation—Traditional and Modern

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

Unit–II

Study of the contents and main concepts with special reference to the following Upaniṣads :

Īśa; Kaṭha; Kena; Bṛhadāraṇyaka; Taittirīya

Unit–III

General and brief introduction of Vedāṅgas

Nirukta (Chapters I and II)

Four-fold division of Padas—Concept of Nāma; Concept of Ākhyāta; Meaning of Upasargas; Categories of Nipātas

Six states of Action (Ṣaḍbhāvavikāra)

Purposes of the study of Nirukta

Principles of Etymology

Etymology of the following words :

Ācārya; Vīra; Hrada; Go; Samudra; Vṛtra; Āditya; Uṣas; Megha; Vāk; Udak; Nadī; Aśva; Agni; Jātavedas; Vaiśvānara; Nighaṇṭu

Unit–IV

Mahābhāṣya (Paspaśāhnika) :

Definition of Śabda

Relation between Śabda and Artha

Purposes of the study of grammar

Definition of Vyākaraṇa

Result of the proper use of word

Method of grammar

Siddhāntakaumudī :

Tiṅanta (Bhū and Edh only)

Kṛdanta (Kṛtya Prakriyā only)

Taddita (Matvarthīya)

Kāraka

Strī pratyaya

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

Linguistics :

- Definition of language
- Classification of languages (geneological and morphological)
- Speech-mechanism with special reference to Sanskrit sounds
- Causes of phonetic-change
- Phonetic laws (Grimm, Grassmann and Verner)
- Directions of semantic change and reasons of change
- Definition of Vākya and its types
- General and brief introduction of Indo-European family of languages
- Difference between Bhāṣā and Vāk
- Difference between language and dialect

Unit–V

Explanation and critical questions

- Sāṃkhyakārikā of Īśvarakriṣṇa
- Vedāntasāra of Sadānanda
- Arthasaṃgraha of Laugākṣi Bhāskara

Unit–VI

Rāmāyaṇa

- Arrangement of the Rāmāyaṇa
- Legends in the Rāmāyaṇa
- Society in the Rāmāyaṇa
- Rāmāyaṇa as a source of later Sanskrit works
- Literary value of the Rāmāyaṇa

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

Mahābhārata

- Arrangement of the Mahābhārata
- Legends in the Mahābhārata
- Society in the Mahābhārata
- Mahābhārata as a source of later Sanskrit works
- Literary value of the Mahābhārata

Purāṇas

- Definition of Purāṇa
- Mahāpurāṇas and Upapurāṇas
- Purāṇic cosmology
- Purāṇas and Secular Arts
- Purāṇic legends

Unit–VII

- Kauṭilīya Arthaśāstra (First ten Adhikāra)
- Manusmṛti (I, II and VII Adhyāyas)
- Yājñavalkyasmṛti (Vyavahārādhyaya only)

Unit–VIII

Poetry :

- Raghuvaṁśa (I and XIV Cantos)
- Kirātārjunīya (I Canto)
- Śiśupālavadha (I Canto)
- Naiṣadhīyacarita (I Canto)

Prose :

- Daśakumāracaritam (VIII Ucchvāsa)
- Harṣacaritam (V Ucchvāsa)
- Kādambarī (Mahāśvetā Vṛttānta)

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

Kāvyaśāstra :

Kāvyaprakāśa—Kāvyalakṣaṇa; Kāvyaprayojana; Kāvyahetu; Kāvyabheda; Śabdaśakti; Abhihitānvayavāda; Anvitābhidhānavāda; Concept of Rasa and discussion of Rasasūtra; Rasadoṣa; Kāvyaguṇa

Alaṁkāras—Anuprāsa; Śleṣa; Vakrokti; Upamā; Rūpaka; Utprekṣā; Samāsokti; Apahnuti; Nidarśanā; Arthāntaranyāsa; Dṛṣṭānta; Vibhāvanā; Viśeṣokti; Saṅkara; Sansṛṣṭi

Dhvanyāloka (I Udyota)

Unit–IX

Nāṭya—Karṇabhāra; Abhijñānaśākuntala; Uttararāmacarita; Mudrārākṣasa; Ratnāvalī

Nāṭyaśāstra—Nāṭyaśāstra of Bharata (I, II and VI Adhyāya); Daśarūpaka (I and III Prakāśa)

Unit–X

Tarkasaṁgraha (with Dīpikā)

Tarkabhāṣā of Keśavamiśra

A study of the concepts of Pramāṭṛ, Prameya, Pramāṇa and Pramiti

PAPER—III(B)

[ELECTIVE / OPTIONAL]

Elective-I

Saṁhitās :

Study of the following hymns :

Ṛgveda

Varuṇa [1.25]
Sūrya [1.125]
Uṣas [3.61]
Parjanya [5.83]

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व. विद्यालय, रोहतक

Śukla Yajurveda

- Śivasaṅkalpa [1.6]
- Prajāpati [1.5]

Atharvaveda

- Rāṣṭrābhivardhanam [1.29]
- Kāla [10.53]

Brāhmaṇa :

- Subject-matter
- Vidhi and its types
- Agnihotra and Agniṣṭoma Sacrifices
- Affiliation of the Brāhmaṇa texts with different Saṁhitās

Ṛkprātiśākhya :

Definitions of the following :

- Samānākṣara; Sandhyakṣara; Aghoṣa; Soṣman; Svarabhakti; Yama; Rakta; Saṁyoga; Pragṛhya; Riphita

Nirukta (VII Adhyāya—Daivata Kāṇḍa)

- Types of Mantras
- Characteristics of Deities
- Number of Deities

Elective-II

Vākyapadīya (Brahmakāṇḍa)

- Nature of Sphoṭa; Nature of Śabda-Brahma; Powers of Śabda-Brahma; Relation between Sphoṭa and Dhvani; Relation between Śabda and Artha; Types of Dhvani; Levels of language

Siddhāntakaumudī

- Samāsa; Parasmaipadavidhāna; Ātmanepadavidhāna

Pāṇinīyaśikṣā

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

Elective-III

Yogasūtra—Vyāsabhāṣya

Cittabhūmi; Cittavṛttis; Concept of Īśvara; Yogāṅgas; Samādhi; Kaivalya

Vedānta : Brahmasūtra-Śānkarabhāṣya (1.1)

Nyāya-Vaiśeṣika : Nyāyasiddhānta-Muktābalī (Anumāna Khaṇḍa)

Sarvadarśana-saṅgraha : Jainism; Buddhism

Elective-IV

Kāvya-prakāśa (II and V Ullāsa)

Vakroktijīvitam (I Unmeṣa)

Kāvyamīmāṅsā (I to V Adhyāyas)

Rasagangādhara (I Ānana up to Rasanirūpaṇa)

Elective-V

Palaeography :

History of the decipherment of the Brāhmī Script

Antiquity of the art of writing in India

Theories of the origin of the Brāhmī Script

Types of Epigraphical records

Brāhmī Script of the Mauryan and Gupta periods

Inscriptions of Aśoka :

Major Rock Edicts

Major Pillar Edicts

Gujarrā Minor Rock Edict

Māski Rock Edict

Rummindei Pillar Edict

Bilingual Inscription from Kāndhāra

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

Post-Mauryan Inscriptions :

Sāranātha Buddhist Image Inscription of Kaniṣka's regal—year, 3

Mankiālā Inscription of Kaniṣkas regal—year, 18

Nāsik Cave Inscription of Nahapānas time (years 41, 42, 45)

Girnār Rock Inscription of Rudradāman

Hāthīgumphā Inscription of Khāravela

Gupta and post-Gupta Inscriptions :

Allahabad Pillar Inscription of Samudragupta

Mathura Stone Inscription of Chandragupta II's reign—year 61

Mehrauli Iron Pillar Inscription of Chandra

Bilsad Pillar Inscription of the time of Kumāragupta I

Damodarpur Copper Plate Inscription of Kumāragupta I—year 128

Girnār Rock Inscription of Skandagupta

Indore Copper Plate Inscription of Skandagupta

Bhitari Pillar Inscription of Skandagupta

Mandasor Stone Inscription of the Guild of silk weavers

Poona Copper Plate Inscription of Prabhāvatī Guptā

Eran Inscription of Toramāṇa

Gwalior Inscription of Mihirakula

Mandasor Pillar Inscription of Yasodharman

Mandasor Stone Inscription of Yaśodharman-Viṣṇuvardhana

Bodhagaya Inscription of Mahānāman

Nālandā Stone Inscription of the time of Yaśovarmadeva

Aphsad Stone Inscription of Ādityasena

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक

Deobarnārka Inscription of Jīvitagupta II

Māliyā Copper Plate Inscription of Dharasena II

Haṛahā Inscription of Īśānavarman

Banāskherā Copper Plate Inscription of Harṣa

Aihole Stone Inscription of Pulakeśīn II

Gwalior Inscription of Pratihāra King Mihirbhoja

★★★

अध्यक्ष
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक